साइकिल पर सवार होकर उनको रास्ते में मिलें। हमें साइकिल पर सवार देखकर उन लोगों की क्या हालत होगी! हैरान हो जाएँगे, आँखें मल-मलकर देखेंगे कि कहीं कोई और तो नहीं! परन्तु हम गरदन टेढ़ी करके दूसरी तरफ देखने लग जाएँगे, जैसे हमें कुछ मालूम ही नहीं है, जैसे यह सवारी हमारे लिए साधारण बात है।

झक मारकर बताना पड़ा कि रोज-रोज ताँगे का खर्च मारे डालता है। साइकिल चलाना सीखेंगे।

श्रीमती जी ने बच्चे को सुलाते हुए हमारी तरफ देखा और मुस्कुराकर बोलीं, "मुझे तो आशा नहीं कि आपसे यह बेल मत्थे चढ़ सके। खैर यत्न कर देखिए। मगर इन कपड़ों का क्या बनेगा?"

हमने ज़रा रोब से कहा, " आखिर बाइसिकिल से एक दो बार गिरेंगे या नहीं? और गिरने से कपड़े फटेंगे या नहीं? जो मूर्ख हैं, वे नए कपड़ों का नुकसान कर बैठते हैं। जो बुद्धिमान हैं, वे पुराने कपड़ों से काम चलाते हैं।"

मालूम होता है, हमारी इस युक्ति का जवाब हमारी स्त्री के पास कोई न था क्योंकि उन्होंने उसी समय मशीन मँगवाकर उन कपड़ों की मरम्मत शुरू कर दी।

इधर हमने बाज़ार जाकर जंबक के दो डिब्बे खरीद लिए कि चोट लगने पर उसका उसी समय इलाज किया जा सके। इसके बाद जाकर एक खुला मैदान तलाश किया ताकि दूसरे दिन से साइकिल-सवारी का अभ्यास किया जा सके।

अब यह सवाल हमारे सामने था कि अपना उस्ताद किसे बनाएँ। इसी उधेड़बुन में बैठे थे कि तिवारी लक्ष्मीनारायण आ गए और बोले, "क्यों भाई, हो जाए एक बाजी शतरंज की?"

हमने सिर हिलाकर जवाब दिया, "नहीं साहब! आज तो जी नहीं चाहता।"

"क्यों?"

"यदि जी न चाहे तो क्या करें।?"

यह कहते-कहते हमारा गला भर आया। तिवारी जी का दिल पसीज गया। हमारे पास बैठकर बोले, "अरे भाई, मामला क्या है? स्त्री से झगड़ा तो नहीं हो गया?"

हमने कहा, " तिवारी भैया, क्या कहें? सोचा था, लाओ, साइकिल की सवारी सीख लें। मगर अब कोई ऐसा आदमी नहीं दिखाई देता जो हमारी सहायता करें। बताओ, है कोई ऐसा आदमी तुम्हारे ख्याल में?"

तिवारी जी ने हमारी तरफ बेबसी की आँखों से ऐसे देखा मानो हमको कोई खजाना मिल रहा है, और वे खाली हाथ रह जाते हैं। बोले, "मेरी मानो तो रोग न पालो। अब इस आयु में साइकिल पर चढ़ोगे? और यह भी कोई सवारियों में सवारी है कि डंडे पर उकड़ूँ बैठे हैं और पाँव चला रहे हैं। अजी लानत भेजो इस ख्याल पर आओ एक बाजी खेलें।"

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

फुंका जाता है। मुँह फुलाकर हमने कहा, "भाई तिवारी, हम तो जरूर सीखेंगे। कोई आदमी बताओ।"

"आदमी तो ऐसा है एक, मगर वह मुफ्त नहीं सिखाएगा। फीस लेगा। दे सकोगे?"

"कितने दिन में सिखा देगा?"

"यही दस-बारह दिनों में!"

"और फीस क्या लेगा हमसे?"

"औरों से पचास लेता है। तुमसे बीस ले लेगा हमारी खातिर।" हमने सोचा-दस दिन सिखाएगा और बीस रुपए फीस लेगा। दस दिन-बीस रुपए। बीस रुपए-दस दिन। अर्थात् दो रुपए रोजाना अर्थात् साठ रुपए महीना, और वह भी एक दो घंटों के लिए। ऐसी तीन-चार ट्यूशनें मिल जाएँ तो ढाई-तीन सौ रुपया महीना हो गया। हमने तिवारी जी से तो इतना ही कहा कि जाकर मामला तय कर आओ, मगर जी में खुश हो रहे थे कि साइकिल चलाना आ जाए तो एक ट्रेनिंग स्कूल खोल दें और तीन-चार सौ रुपए मासिक कमाने लगे।

इधर तिवारी जी मामला तय करने गए, उधर हमने यह शुभ समाचार जाकर श्रीमती जी को सुना दिया कि कुछ दिनों के बाद हम एक ऐसा स्कूल खोलने वाले हैं जिसमें तीन-चार सौ रुपए महीने की आमदनी होगी।

श्रीमती जी बोली, "तुम्हारी इतनी आयु हो गई, मगर ओछापन न गया। पहले आप तो सीख लो, फिर स्कूल खोल लेना। मैं तो समझती हूँ कि तुम सीख ही न सकोगे, दूसरों को सिखाना तो दूर की बात है।"

हमने बिगड़कर कहा, "यह बड़ी बुरी आदत है कि हर काम में टोक देती हो। हमसे बड़े-बड़े सीख रहे हैं तो क्या हम न सीख सकेंगे? और पहले तो शायद सीखते या न सीखते, मगर अब तुमने टोका है तब जरूर सीखेंगे। तुम भी क्या कहोगी"।

श्रीमती जी बोलीं, "मैं तो चाहती हूँ तुम हवाई जहाज चलाओ, यह बाइसिकिल क्या चीज है! पर तुम्हारे स्वभाव से डर लगता है। एक बार गिरोगे तो देख लेना, बाइसिकिल वहीं फेंक-फाँककर चले आओगे।"

इतने में तिवारी जी ने बाहर से आवाज़ दी। हमने जाकर देखा तो उस्ताद साहब खड़े थे। हमने शरीफ विद्यार्थियों के समान श्रद्धा से हाथ जोड़कर प्रणाम किया और चुपचाप खड़े हो गए।

तिवारी जी बोले, "यह तो बीस पर मानते ही न थे। बड़ी मुश्किल से मनाया है। पेशगी लेंगे। कहते हैं, पीछे कोई नहीं देता।"

"अरे भाई, हम देंगे। दुनिया लाख बुरी है, मगर फिर भी भले आदमियों से खाली नहीं है। यह बीस

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

चलाना सिखा दें, फिर देखें, हम इनकी क्या-क्या सेवा करते हैं।"

मगर उस्ताद साहब नहीं माने, बोले, "फीस पहले लेंगे।"

"और यदि आपने नहीं सिखाया तो?"

"नहीं सिखाया तो फीस लौटा देंगे।"

"और यदि फीस न लौटाई तो?"

इस पर तिवारी जी ने कहा, "अरे साहब! क्या यह तिवारी मर गया है? शहर में रहना हराम कर दूँ, बाजार में निकलना बंद कर दूँ। फीस लेकर भाग जाना कोई हँसी-खेल है?

जब हमें विश्वास हो गया कि इसमें कोई धोखा नहीं है तब हमने फीस के रुपए लाकर उस्ताद को भेंट कर दिए और कहा, "उस्ताद, कल सवेरे ही आ जाना। हम तैयार रहेंगे। हमने इस काम के लिए कपड़े भी बनवा लिए हैं। अगर गिर पड़े तो चोट पर लगाने के लिए जंबक भी खरीद लिया है। और हाँ, हमारे पड़ोस में जो मिस्त्री रहता है उससे साइकिल भी माँग ली है। आप सवेरे ही चले आएँ तो हरि नाम लेकर शुरू कर दें।"

तिवारी जी और उस्ताद ने हमें हर तरह से तसल्ली दी और चले गए। इतने में हमें याद आया कि एक बात कहना भूल गए। नंगे पाँव भागे और उन्हें बाज़ार में जाकर पकड़ा। वे हैरान थे। हमने हाँफते-हाँफते कहा, "उस्ताद, हम शहर के पास नहीं सीखेंगे, लारेंसबाग में जो मैदान है, वहाँ सीखेंगे। वहाँ एक तो भूमि नरम है, चोट कम लगती है। दूसरे वहाँ कोई देखता नहीं है।"

अब रात को आराम की नींद कहाँ? बार-बार चौंकते थे और देखते थे कि कहीं सूरज तो नहीं निकल आया। सोते थे तो साइकिल के सपने आते थे। एक बार देखा कि हम साइकिल से गिरकर जख्मी हो गए हैं। साइकिल आप से आप हवा में चल रही है और लोग हमारी तरफ आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे।

जब आँखें खुलीं तो दिन निकल आया था। जल्दी से जाकर वे पुराने कपड़े पहन लिए, जंबक का डिब्बा साथ में ले लिया और नौकर को भेजकर मिस्त्री से साइकिल मँगवा ली। इसी समय उस्ताद साहब भी आ गए और हम भगवान का नाम लेकर लारेंसबाग की ओर चले। लेकिन अभी घर से निकले ही थे कि बिल्ली रास्ता काट गई और एक लड़के ने छींक दिया। क्या कहें हमें कितना क्रोध आया उस नामुराद बिल्ली पर और उस शैतान लड़के पर! मगर क्या करते? दाँत पीसकर रह गए। एक बार फिर भगवान का पावन नाम लिया और आगे बढ़े। पर बाज़ार में पहुँचकर देखा कि हर आदमी हमारी तरफ देखता है, मुस्कुराता है। अब हम हैरान थे कि बात क्या है? सहसा हमने देखा कि हमने जल्दी और घबराहट में पाज़ामा और अचकन दोनों उलटे पहन लिए हैं, और लोग इसी पर हँस रहे हैं। सिर मुड़ाते ही ओले पड़े।

हमने उस्ताद से माफी माँगी और घर लौट आए अर्थात् हमारा पहला दिन मुफ्त में गया।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

दूसरे दिन फिर निकले। रास्ते में उस्ताद साहब बोले, "मैं एक गिलास लस्सी पी लूँ। आप जरा साइकिल को थामिए।"

उस्ताद साहब लस्सी पीने लगे तो हमने साइकिल के पुर्जों की ऊपर-नीचे परीक्षा शुरू कर दी। फिर कुछ जी में आया तो उसका हैण्डल पकड़कर ज़रा चलने लगे। मगर दो ही कदम गए होंगे कि ऐसा मालूम हुआ जैसे साइकिल हमारे सीने पर चढ़ी आती है।

इस समय हमारे सामने यह गंभीर प्रश्न था कि क्या करना चाहिए। युद्ध-क्षेत्र में डटे रहें या हट जाएँ? सोच-विचार के बाद यही निश्चय हुआ कि यह लोहे का घोड़ा है। इसके सामने हम क्या चीज हैं? बड़े-बड़े वीर योद्धा भी नहीं ठहर सकते। इसलिए हमने साइकिल छोड़ दी और भगोड़े सिपाही बनकर मुड़ गए। पर दूसरे ही क्षण साइकिल अपने पूरे जोर से हमारे पाँव पर गिर गई और हमारी रामदुहाई बाजार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूँजने लगी। उस्ताद लस्सी छोड़कर दौड़ आए और दयावान लोग भी जमा हो गए। सबने मिलकर हमारा पाँव साइकिल से निकाला। भगवान के एक भक्त ने जंबक का डिब्बा भी उठाकर हमारे हाथ में दे दिया। दूसरे ने हमारी बगलों में हाथ डालकर हमें संभाला और सहानुभूति से पूछा, "चोट तो नहीं आई? जरा दो-चार कदम चलिए, नहीं तो लहू जम जाएगा।"

इस तरह दूसरे दिन हम और हमारी साइकिल दोनों अपने घर से थोड़ी दूर पर ज़ख़्मी हो गए। हम लँगड़ाते हुए घर लौट आए और साइकिल ठीक होने के लिए मिस्त्री की दुकान पर भेज दी।

मगर हमारे वीर हृदय का साहस और धीरज देखिए। अब भी मैदान में डटे रहे। कई बार गिरे, कई बार शहीद हुए। घुटने तुड़वाए, कपड़े फड़वाए, मगर क्या मजाल जो जी छूट जाए। आठ-नौ दिन में साइकिल चलाना सीख गए थे। लेकिन अभी उस पर चढ़ना नहीं आता था। कोई परोपकारी पुरुष सहारा देकर चढ़ा देता तो फिर लिए जाते थे। हमारे आनंद की कोई सीमा न थी। सोचते थे, मार लिया मैदान हमने! दो-चार दिन में पूरे मास्टर बन जाएँगे, इसके बाद प्रोफेसर और इसके बाद प्रिंसिपल, फिर ट्रेनिंग कॉलेज और तीन-चार सौ रुपए मासिक। तिवारी जी देखेंगे और ईर्ष्या से जलेंगे।

उस दिन उस्ताद ने हमें साइकिल पर चढ़ा दिया और सड़क पर छोड़ दिया कि ले जाओ, अब तुम सीख गए।

अब हम साइकिल चला रहे थे और दिल ही दिल फूले न समाते थे। मगर हाल यह था कि कोई आदमी दो सौ गज़ के फासले पर होता तो हम गला फाड़-फाड़कर चिल्लाना शुरू कर देते- साहब! ज़रा बाईं तरफ हट जाइए। दूर फासले पर कोई गाड़ी दिखाई देती तो हमारे प्राण सूख जाते। उस समय हमारे मन की जो दशा होती उसे परमेश्वर ही जानता है। जब गाड़ी निकल जाती तब कहीं जाकर हमारी जान में जान आती।

सहसा सामने से तिवारी जी आते दिखाई दिए। हमने उन्हें भी दूर से ही अल्टीमेटम दे दिया कि तिवारी जी, बाईं तरफ हो जाओ वरना साइकिल तुम्हारे ऊपर चढ़ा देंगे।

तिवारी जी ने अपनी छोटी-छोटी आँखों से हमारी तरफ देखा और मुस्कुराकर कहा, " ज़रा एक बात तो सुनते जाओ।"

हमने एक बार हैण्डल की तरफ, दूसरी बार तिवारी जी की तरफ देखकर जवाब दिया, " इस समय बात सुन सकते हैं? देखते नहीं हो, साइकिल पर सवार हैं।"

तिवारी जी बोले, "तो क्या जो साइकिल चलाते हैं वे किसी की बात नहीं सुनते हैं? बड़ी जरूरी बात है, जरा उतर आओ।"

हमने लड़खड़ाती हुई साइकिल को सँभालते हुए जवाब दिया, " उतर आएँ तो फिर चढ़ाएगा कौन? अभी चलाना सीखा है, चढ़ना नहीं सीखा।"

तिवारी जी चिल्लाते ही रह गए, हम आगे निकल गए।

इतने में सामने से एक ताँगा आता दिखाई पड़ा। हमने उसे भी दूर से डाँट दिया, "बाईं तरफ भाई। अभी नए चलानेवाले हैं।"

ताँगा बाईं तरफ हो गया। हम अपने रास्ते चले जा रहे थे। एकाएक पता नहीं घोड़ा भड़क उठा या ताँगेवाले को शरारत सूझी, जो भी हो, ताँगा हमारे सामने आ गया। हमारे हाथ-पाँव फूल गए। ज़रा-सा

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: AB SOL www.absol.in

हैण्डल घुमा देते तो हम दूसरी तरफ निकल जाते। मगर बुरा समय आता है तो बुद्धि पहले ही भ्रष्ट हो जाती है। उस समय हमें ख़्याल ही न आया कि हैण्डल घुमाया भी जा सकता है। फिर क्या था, हम और हमारी साइकिल दोनों ही ताँगे के नीचे आ गए और हम बेहोश हो गए।

जब हम होश में आए तब हम अपने घर में थे- और हमारी देह पर कितनी ही पट्टियाँ बँधी थीं। हमें होश में देखकर श्रीमती जी ने कहा, "क्यों? अब क्या हाल है? मैं कहती न थी, साइकिल चलाना न सीखो! उस समय तो किसी की सुनते ही न थे।"

हमने सोचा, लाओ सारा इलजाम तिवारी जी पर लगा दें और आप साफ बच जाएँ। बोले, "यह सब तिवारी जी की शरारत है।"

श्रीमती जी ने मुस्कुराकर जवाब दिया, "यह तो तुम उसको चकमा दो जो कुछ जानता न हो। उस ताँगे पर मैं ही तो बच्चों को लेकर घूमने निकली थी कि चलो सैर भी कर आएँगे और तुम्हें साइकिल चलाते भी देख आएँगे!"

हमने निरुतर होकर आँखें बंद कर लीं।

उस दिन के बाद फिर कभी हमने साइकिल को हाथ नहीं लगाया।

- सुदर्शन

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

अचकन- बंद गले का लम्बा कोट	**नामुराद**- अभागा	**अल्टीमेटम**-चेतावनी
प्रारब्ध-भाग्य, तकदीर	**उधेड़बुन**- ऊहापोह	**पेशगी**-अग्रिम
उस्ताद-गुरु	**बेबसी**-लाचारी	**युक्ति**-तरीका
योद्धा-युद्ध करने वाला		

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. साइकिल चलाने के बारे में लेखक की क्या धारणा थी? क्या यह धारणा सही थी? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
2. लेखक ने साइकिल सीखने के लिए कौन-कौन सी तैयारियाँ की?
3. लेखक के झूठ की पोल कैसे खुल गयी?

4. किसने किससे कहा

(क) " कितने दिन में सिखा देगा?"

(ख) " नहीं सिखाया तो फीस लौटा देंगे।"

(ग) "मुझे तो आशा नहीं कि आपसे यह बेल मत्थे चढ़ सके।"

(घ) "हम शहर के पास नहीं सीखेंगे। लारेंसबाग में जो मैदान है वहाँ सीखेंगे।"

पाठ से आगे

1. बिल्ली के रास्ता काटने एवं बच्चे के छींकने पर लेखक को गुस्सा आया। क्या लेखक का गुस्सा करना उचित था। अपना विचार लिखिए।
2. किसी काम को सम्पन्न करने में आपको किससे किस प्रकार की मदद की अपेक्षा रहती है।

व्याकरण

1. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए

(क) मैदान में डटे रहना–

(ख) मैदान मार लेना–

(ग) हाथ–पाँव फूलना–

(घ) दाँत पीसना–

2. उदाहरण के अनुसार दो वाक्यों को एक वाक्य में बदलिए

(क) श्रीमती जी ने बच्चे को सुलाया। हमारी तरफ देखा।

– श्रीमती जी ने बच्चे को सुलाकर हमारी तरफ देखा।

(ख) उसी समय मशीन मँगवाया। उन कपड़ों की मरम्मत शुरू कर दी।

....

(ग) उस्ताद ने हमें तसल्ली दी। चले गए।

....

(घ) साइकिल का हैण्डल पकड़ा । चलने लगे।

....

गतिविधि

1. साइकिल में अनेक पार्ट–पुर्जे होते हैं। इन पार्ट–पुर्जों के नाम की सूची बनाइए।
2. 'हड़बड़ में गड़बड़' पर कोई किस्सा अपनी कक्षा में सुनाइए।
3. आपने साइकिल चलाना कैसे सीखा, पूरी प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

8 बचपन के दिन

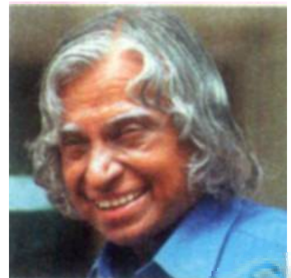

मेरा जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यमवर्गीय तमिल परिवार में हुआ था। मेरे पिता जैनुलाबदीन की कोई बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी और न ही वे कोई बहुत धनी व्यक्ति थे। इसके बावजूद वे बुद्धिमान थे और उनमें उदारता की सच्ची भावना थी। मेरी माँ, आशियम्मा, उनकी आदर्श जीवनसंगिनी थीं। हम लोग अपने पुश्तैनी घर में रहते थे। रामेश्वरम् की मस्जिदवाली गली में बना यह घर पक्का और बड़ा था।

बचपन में मेरे तीन पक्के मित्र थे- रामानंद शास्त्री, अरविंदन और शिवप्रकाशन। जब मैं रामेश्वरम् की प्राथमिक पाठशाला में पाँचवीं कक्षा में था तब एक नये शिक्षक हमारी कक्षा में आए। मैं टोपी पहना करता था, जो मेरे मुसलमान होने का प्रतीक था। कक्षा में मैं हमेशा आगे की पंक्ति में जनेऊ पहने रामानंद के साथ बैठा करता था। नये शिक्षक को एक हिंदू लड़के का मुसलमान लड़के के साथ बैठना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मुझे पीछे वाली बेंच पर चले जाने को कहा। रामानंद भी मुझे पीछे की पंक्ति में बैठाए जाते देख काफी उदास नजर आ रहा था। पाठशाला की छुट्टी होने पर हम घर गए और सारी घटना अपने घरवालों को बताई। यह सुनकर रामानंद के पिता लक्ष्मण शास्त्री (जो रामेश्वरम् मंदिर के मुख्य पुजारी थे) ने उन शिक्षक महोदय को बुलाया और कहा कि उन्हें निर्दोष बच्चों के दिमाग में इस प्रकार की सामाजिक असमानता एवं सांप्रदायिकता का विष नहीं घोलना चाहिए। शिक्षक महोदय ने अपने किए व्यवहार पर न केवल दुख व्यक्त किया, बल्कि लक्ष्मण शास्त्री के कड़े रुख एवं धर्मनिरपेक्षता में उनके विश्वास से शिक्षक में अंततः बदलाव आ गया।

BSTBPC © WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

प्राथमिक पाठशाला में मेरे विज्ञान शिक्षक शिव सुब्रह्मण्यम् अय्यर कट्टर ब्राह्मण थे, लेकिन वे कुछ-कुछ रूढ़िवाद के खिलाफ हो चले थे। वे मेरे साथ काफी समय बिताते थे और कहा करते थे, " कलाम, मैं तुम्हें ऐसा बनाना चाहता हूँ कि तुम बड़े शहरी लोगों के बीच एक उच्च शिक्षित व्यक्ति के रूप में पहचाने जाओ।"

एक दिन उन्होंने मुझे अपने घर खाने पर बुलाया। उनकी पत्नी इस बात से बहुत ही परेशान थीं कि उनकी रसोई में एक मुसलमान को भोजन पर आमंत्रित किया गया है। उन्होंने अपने रसोईघर के अंदर मुझे खाना खिलाने से साफ इनकार कर दिया। अय्यर जी ने मुझे फिर अगले सप्ताह रात के खाने

पर आने को कहा। मेरी हिचकिचाहट को देखते हुए वे बोले, “ इसमें परेशान होने की जरूरत नहीं है। एक बार जब तुम व्यवस्था बदल डालने का फैसला कर लेते हो तो ऐसी समस्याएँ सामने आतीं ही हैं।”

अगले सप्ताह जब मैं उनके घर रात्रिभोज पर गया तो उनकी पत्नी ही मुझे रसोईघर में ले गईं और स्वयं अपने हाथों से खाना परोसा।

पंद्रह साल की उम्र में मेरा दाखिला रामेश्वरम् के जिला मुख्यालय रामनाथपुरम् स्थित श्वार्ट्ज हाई स्कूल में हुआ। मेरे एक शिक्षक आयादुरै सोलोमन बहुत ही स्नेही व खुले दिमाग वाले व्यक्ति थे। वे सदैव छात्रों का उत्साह बढ़ाते रहते थे। रामनाथपुरम् में रहते हुए आयादुरै सोलोमन से मेरे संबंध काफी प्रगाढ़ हो गए थे। वे कहा करते थे, “जीवन में सफल होने और परिणाम प्राप्त करने के लिए तुम्हें तीन प्रमुख शक्तिशाली ताकतों को समझना चाहिए-इच्छा, आस्था और उम्मीदें।” उन्होंने ही मुझे सिखाया कि मैं जो कुछ भी चाहता हूँ, पहले उसके लिए मुझे तीव्र कामना करनी होगी, फिर निश्चित रूप से मैं उसे पा सकूँगा। वे सभी छात्रों को उनके भीतर छिपी शक्ति एवं योग्यता का आभास कराते थे। वे कहा करते थे, “निष्ठा एवं विश्वास से तुम अपनी नियति को बदल सकते हो।”

–ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

© BSTBPC
WEBCOPY - NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

औपचारिक– विधिवत्   **जीवनसंगिनी**–पत्नी   **पुश्तैनी**–खानदानी   **निर्दोष**–दोषरहित
दाखिला–प्रवेश   **आस्था**– विश्वास   **कामना**– इच्छा   **आभास**–महसूस
प्रशंसा– बड़ाई   **धर्मनिरपेक्षता**–धर्मो.को समान रूप से देखना

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(अ) भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म हुआ था।

(क) बिहार में (ख) उड़ीसा में (ग) तमिलनाडु में (घ) कर्नाटक में

(ब) रामानन्द के पिता थे।

(क) सरकारी सेवक (ख) मन्दिर के पुजारी (ग) किसान (घ) व्यवसायी

(स) अब्दुल कलाम के बचपन में कितने पक्के मित्र थे।

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

2. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को शिक्षा ग्रहण करने में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

3. रामानन्द के पिता ने दोनों दोस्तों के प्रति भेद-भाव का व्यवहार करने वाले शिक्षक से क्या कहा और ऐसा उन्होंने क्यों कहा?

पाठ से आगे

1. डॉ. अब्दुल कलाम के विज्ञान शिक्षक की पत्नी की सोच में क्या परिवर्तन हुआ, इस परिवर्तन के क्या कारण रहे होंगे?

2. नये शिक्षक के द्वारा डॉ. अब्दुल कलाम को उनके मित्र रामानन्द से अलग हटकर बैठने को कहा गया। शिक्षक के इस व्यवहार पर अपनी राय तर्क सहित दीजिए।

व्याकरण

1. वाक्य बनाइए-

गली, पाठशाला, शिक्षक, इच्छा, तीव्र

2. पर्यायवाची शब्द लिखिए-

धनी, घर, व्यक्ति, दिन, पत्नी

गतिविधि

1. भारत में अबतक जितने भी राष्ट्रपति बने हैं, उनकी सूची क्रमानुसार बनाइए। आप चाहें तो उनके चित्र भी संग्रह कर सकते हैं।

2. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में किए गए कार्यों की जानकारी प्राप्त कीजिए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED